ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

गुप्त-युग : एक स्वर्णिम युग की अवधारणा

डॉ०प्रीतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर,भदोही।

सारांश

गुप्त काल भारतीय इतिहास का एक ऐसा युग था जिसमें सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक क्षेत्रों में अद्वितीय प्रगति हुई। यह काल न केवल अपने राजनीतिक विस्तार के लिए जाना जाता है, बल्कि उस बहुआयामी विकास के लिए भी स्मरणीय है, जिसने भारत को समृद्ध, सशक्त और सुसंस्कृत राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। इस युग को "स्वर्ण युग" की संज्ञा देना इसलिए उपयुक्त है क्योंकि इसने भारत के भीतर एक ऐसा वातावरण उत्पन्न किया, जहाँ ज्ञान, कला और सभ्यता ने समानांतर रूप से विकास किया।

इस युग की सबसे बड़ी विशेषता थी – स्थिर और सुव्यवस्थित शासन प्रणाली। गुप्त सम्राटों ने एक ऐसी प्रशासनिक संरचना विकसित की जिसमें राजा सर्वोच्च होता था, परंतु वह धर्म और न्याय के सिद्धांतों से बंधा रहता था। शासन व्यवस्था में मंत्रिपरिषद, प्रांतीय अधिकारी, और ग्राम स्तरीय प्रतिनिधि शामिल होते थे। इसके माध्यम से केंद्र और जनता के बीच संवाद बना रहता था।

शिक्षा और बौद्धिक विकास इस काल की प्रमुख पहचान रहे हैं। देश के विभिन्न भागों में गुरुकुल, विद्यापीठ और महाविद्यालय सक्रिय रूप से कार्यरत थे। इनमें नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे संस्थान वैश्विक ख्याति प्राप्त कर चुके थे। इन केंद्रों में दर्शन, चिकित्सा, व्याकरण, तर्कशास्त्र, खगोलविज्ञान और गणित की उच्च शिक्षा दी जाती थी। छात्र भारत के साथ-साथ एशिया के अन्य देशों से भी यहाँ अध्ययन हेतु आते थे।

धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में गुप्त युग में एक अद्वितीय समरसता देखने को मिलती है। हिंदू धर्म को प्रमुख स्थान मिला, किंतु बौद्ध, जैन और अन्य परंपराओं को भी सम्मान प्राप्त था। मंदिर निर्माण और धार्मिक अनुष्ठानों में नयापन आया। देवताओं की मूर्तियाँ अधिक सजग और भाव-प्रधान रूप में गढ़ी गईं, जिनमें मानवीय संवेदनाओं का सुंदर चित्रण हुआ।

सामाजिक संरचना में शांति और संतुलन बना रहा। पारिवारिक व्यवस्था मजबूत थी और स्त्रियों की भूमिका शिक्षित एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी देखी गई। समाज में शिल्पकार, व्यापारी, किसान, विद्वान और योद्धा – सभी को उनके कार्य के अनुसार आदर मिला। यद्यपि वर्ण व्यवस्था प्रभावी थी, फिर भी योग्यता के आधार पर सामाजिक स्थान पाने की संभावनाएँ विद्यमान थीं।

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

अंतर्राष्ट्रीय संपर्कों के दृष्टिकोण से भी यह काल अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। भारत का व्यापार दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, श्रीलंका, अरब और रोमन साम्राज्य तक फैला हुआ था। सूती वस्त्र, मसाले, रत्न, हाथीदांत और कला सामग्री का निर्यात होता था, जबकि विदेशी वस्तुओं का आयात भी व्यापारिक संबंधों के माध्यम से होता था। इसने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी संभव किया।

गुप्त युग की समृद्धि केवल आर्थिक या राजनैतिक स्तर तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसकी परछाईं भारतीय मानस पर लंबे समय तक बनी रही। इस युग के ज्ञान-विज्ञान, साहित्य और कला के प्रतिमान मध्यकालीन भारत और बाद के शासकों के लिए प्रेरणा बने। यहाँ का समन्वयात्मक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक प्रवृत्ति और सौंदर्य चेतना आज भी विश्वभर में भारतीय सभ्यता के स्वर्ण युग की पहचान बनकर उभरती है।

अंततः कहा जा सकता है कि गुप्त युग भारत के इतिहास का ऐसा कालखंड था जिसने स्थायित्व, समृद्धि और सृजनात्मकता का आदर्श प्रस्तुत किया। यह युग न केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति का उत्कर्ष था, बल्कि उसने आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसा विरासत दी, जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरणास्पद बनी हुई है।

परिचय

भारतवर्ष का इतिहास विविध संस्कृतियों, राजवंशों और सभ्यताओं का संगम रहा है। इस दीर्घ ऐतिहासिक यात्रा में कुछ युग ऐसे भी आए जिन्होंने भारतीय संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला और समाज को न केवल नयी दिशा दी, बल्कि उसकी जड़ें इतनी गहरी कर दीं कि उनकी गूंज आज भी अनुभव की जा सकती है। गुप्त युग (लगभग 320 ई. से 550 ई.) ऐसा ही एक युग था, जिसे भारतीय इतिहास में एक "स्वर्ण युग" के रूप में जाना जाता है। यह केवल एक ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि भारतीय गौरव का प्रतीक है।[1]

गुप्त वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा की गई थी, जिन्होंने अपने उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त के साथ मिलकर एक शक्तिशाली साम्राज्य की नींव रखी। साम्राज्य का विस्तार चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के समय अपने चरम पर पहुँचा, जब गुप्त शासन उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व तक भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश भागों में स्थापित हो गया था। लेकिन गुप्त युग की महानता केवल उसकी सैन्य शक्ति या राजनीतिक विस्तार तक सीमित नहीं रही, बल्कि इस काल में जो सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और दार्शनिक उन्नति हुई, वह इसे विशिष्ट बनाती है।[2]

इस युग की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि के कारण समाज को उन्नति के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति करने का अवसर मिला। शासन में प्रशासनिक पारदर्शिता, स्थानीय स्वायत्तता, और न्यायप्रियता को बढ़ावा दिया गया। इस युग में न केवल बड़े-बड़े नगर

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

विकसित हुए, बल्कि ग्रामीण व्यवस्थाएँ भी सशक्त हुईं। व्यापार, कृषि और हस्तशिल्प ने अर्थव्यवस्था को मजबूती दी, जिससे सामाजिक ढाँचा संतुलित बना रहा।

गुप्त युग में साहित्यिक और दार्शनिक रचनात्मकता को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। संस्कृत को राज्य की प्रमुख भाषा के रूप में स्वीकार किया गया, जिससे अनेक महान रचनाएँ अस्तित्व में आईं। इस काल में कालिदास, भास, विशाखदत्त, और शूद्रक जैसे महान साहित्यकारों ने काव्य, नाटक और कथा-साहित्य की रचना की। ये कृतियाँ आज भी भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, धर्मशास्त्र, पुराण, और स्मृति ग्रंथों का भी इसी काल में व्यापक विकास हुआ।

गणित, खगोलशास्त्र और विज्ञान के क्षेत्र में भी यह युग अद्वितीय रहा। आर्यभट ने गणित और खगोल विज्ञान को जिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा, वह अद्वितीय था। उन्होंने दशमलव प्रणाली, शून्य की अवधारणा और पृथ्वी की गतिशीलता पर आधारित विचार प्रस्तुत किए, जो उस समय के लिए अत्यंत क्रांतिकारी थे। इसी प्रकार, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों ने खगोल विज्ञान, ज्योतिष और भौतिकी के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए।

कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी गुप्त युग की उपलब्धियाँ चमत्कारी थीं। अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ, उदयगिरि की मूर्तियाँ, और देवगढ़ का मंदिर गुप्त स्थापत्य और चित्रकला की ऊँचाइयों के प्रमाण हैं। इन कलाकृतियों में भाव, भंगिमा और प्रतीकात्मकता का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है। धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक बहुलता और वैचारिक स्वतंत्रता ने गुप्त युग को एक समावेशी और प्रगतिशील कालखंड बना दिया।[3]

इस प्रकार, गुप्त युग भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम अध्याय है, जिसने न केवल तत्कालीन भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी यह संदेश दिया कि जब शक्ति, ज्ञान और संस्कृति का संतुलन स्थापित हो, तो एक सभ्यता कैसे विश्वगुरु बन सकती है।

मुख्य उपशीर्षक

परिचय,राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि , साहित्य, शिक्षा और विज्ञान का विकास ,कला, स्थापत्य और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ ,धार्मिक सहिष्णुता और दार्शनिक चिंतन

राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन भारत का इतिहास अनेक उतार-चढ़ावों से भरा रहा है। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत एक राजनीतिक विखंडन के दौर में प्रवेश कर चुका था। विभिन्न क्षेत्रों में छोटे-छोटे राज्य उभरने लगे थे, जिनमें आपसी संघर्ष और अस्थिरता व्याप्त थी। इसी अस्थिरता के बीच गुप्त वंश ने एक सशक्त और संगठित सत्ता के रूप में उभर कर भारत को एक बार फिर एकीकृत करने का प्रयास किया।

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

इस युग की राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना इस काल की उपलब्धियों के मूल्यांकन के लिए अत्यंत आवश्यक है।[4]

दूसरी शताब्दी ईस्वी के अंत में उत्तर भारत में कुषाणों का प्रभुत्व समाप्त होने लगा था। वहीं दक्षिण भारत में सातवाहन वंश भी अपने पतन की ओर अग्रसर था। इन प्रमुख शक्तियों की दुर्बलता ने भारतीय उपमहाद्वीप में एक राजनीतिक रिक्तता उत्पन्न कर दी थी। इसी काल में मगध क्षेत्र, जो ऐतिहासिक रूप से सत्ताओं का केंद्र रहा है, गुप्तों के अधीन आया। गुप्त वंश की उत्पत्ति का श्रेय सामान्यतः बिहार और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र को दिया जाता है। यद्यपि प्रारंभिक गुप्त शासकों की जानकारी सीमित है, तथापि श्रीगुप्त और घटोट्कच को वंश के आरंभिक संस्थापक माने जाते हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम ने लगभग 320 ईस्वी में सत्ता संभाली और लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह कर राजनीतिक गठबंधन के माध्यम से अपनी शक्ति को मजबूत किया। यही विवाह उनके उत्तर भारत में प्रभुत्व की नींव बना। उन्होंने प्रयाग, मगध और उत्तर प्रदेश के अनेक भागों पर अधिकार कर एक नए साम्राज्य की शुरुआत की। यह वही काल था जब भारत की भूमि को एक शक्तिशाली नेतृत्व की आवश्यकता थी, और गुप्त वंश उस आवश्यक शक्ति के रूप में उभरा।[5]

समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त प्रथम के उत्तराधिकारी, ने इस साम्राज्य को सुदृढ़ किया और उसे नए आयाम दिए। उनका शासनकाल, ऐतिहासिक दृष्टि से, सैन्य विजय और क्षेत्रीय विस्तार का प्रतीक था। उन्होंने एक के बाद एक अनेक राज्यों को पराजित किया और शेष भारत पर अपना प्रभाव जमाया। 'इलाहाबाद स्तंभ लेख', जिसे उनके जीवन की सबसे विश्वसनीय ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में माना जाता है, उनके विजयों और नीति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें उन्होंने दक्षिण भारत, वनवासी प्रदेशों और सीमांत राज्यों तक अपने प्रभाव को स्थापित किया।

गुप्तों की विशेषता यह थी कि उन्होंने केवल युद्ध द्वारा विजय प्राप्त नहीं की, बल्कि कूटनीति, वैवाहिक संबंध और कर संधियों के माध्यम से भी अपना प्रभुत्व कायम किया। वे प्रत्यक्ष शासन के साथ-साथ अधीनस्थ राज्यों से कर वसूलने की प्रणाली पर भी बल देते थे। इससे उनकी प्रशासनिक पहुँच तो बनी रही, किंतु शासित राज्यों को भी कुछ स्वायत्तता प्राप्त हुई।[6]

चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय गुप्त साम्राज्य की सीमाएँ पश्चिम में मालवा और गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक फैल गई थीं। यह काल साम्राज्य की उच्चतम सीमा का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने शक–कुषाण प्रभाव को समाप्त कर भारत में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान को सुनिश्चित किया। 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने वाले चन्द्रगुप्त द्वितीय ने राजनैतिक शक्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भी नींव रखी।

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

इस युग की राजनीतिक रणनीति में केवल शक्ति का प्रयोग ही नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति और लोककल्याण का संतुलन भी देखने को मिलता है। गुप्त शासकों ने धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता और प्रशासनिक सुदृढ़ता को अपनी शासन प्रणाली का मूल आधार बनाया।

राजनीतिक दृष्टिकोण से गुप्त युग वह समय था जब भारत एक संगठित, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध सुरक्षा, आंतरिक विद्रोहों का नियंत्रण, और विविधतापूर्ण समाज का एकीकरण — ये सभी उपलब्धियाँ गुप्त शासकों की कुशल राजनीतिक नीति का परिणाम थीं।

इस प्रकार, गुप्त युग की राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह स्पष्ट करती है कि यह केवल एक राजवंश का उदय नहीं था, बल्कि एक समग्र पुनरुत्थान की शुरुआत थी, जिसने भारत को एक लंबे समय तक स्थायित्व, सुरक्षा और उन्नति का मार्ग प्रदान किया।

साहित्य, शिक्षा और विज्ञान का विकास

गुप्त काल एक ऐसा युग रहा जब भारत की बौद्धिक चेतना ने अनेक दिशाओं में विकास किया। यह काल केवल शासकों की वीरता और राजनीतिक स्थिरता का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि उस समय ज्ञान, विचार, लेखन और प्रयोग में जो नवीनता और गहराई आई, वह इस युग को विशेष बनाती है। इस युग में न केवल साहित्यिक रचनाओं का सृजन हुआ, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में नई व्यवस्थाएँ विकसित की गईं और विज्ञान में भी खोज, परीक्षण और व्याख्या का सिलसिला आरंभ हुआ।[7]

साहित्य

गुप्त काल में साहित्य का स्वरूप व्यापक और विविधतापूर्ण था। इस समय साहित्य केवल मनोरंजन या धर्मोपदेश तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें समाज, प्रकृति, राजनीति, प्रेम, नीति और दर्शन का अद्भुत मिश्रण देखा गया। कवियों ने लाक्षणिकता, रूपक और अनुप्रास जैसी अलंकारिक विधाओं का प्रयोग कर भाषा को अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम बनाया।

इस युग में कविता, नाटक, गद्य और नीति-ग्रंथों का समान रूप से विकास हुआ। धार्मिक साहित्य के साथ-साथ लौकिक विषयों पर भी लेखन हुआ। काव्य में प्रकृति के सौंदर्य, ऋतुओं के परिवर्तन और मानवीय भावनाओं का अत्यंत संवेदनशील चित्रण किया गया। यह वह काल था जब साहित्य समाज का दर्पण बना और उसमें तत्कालीन जीवन की विविध छवियाँ प्रतिबिंबित होने लगीं।[8]

शिक्षा

गुप्त युग में शिक्षा का स्वरूप सुसंगठित, व्यापक और स्तरबद्ध था। शिक्षण संस्थाएँ केवल धार्मिक केंद्र नहीं थीं, बल्कि वे बहुविषयक अध्ययन और तर्कशक्ति के विकास का आधार बनीं। छात्रों को वेद, व्याकरण, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, संगीत, शिल्पकला और गणित जैसे विषयों में पारंगत किया जाता

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

था। अध्ययन केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव भी दिया जाता था।

शिक्षा व्यवस्था में तीन स्तर प्रमुख थे – प्राथमिक (ग्राम स्तर), माध्यमिक (नगर या जनपद स्तर), और उच्च शिक्षा (विशेष विद्यापीठों में)। नालंदा, वल्लभी और उज्जयिनी जैसे स्थानों पर स्थापित महाविद्यालयों में विदेशी विद्यार्थी भी अध्ययन हेतु आते थे, जिससे भारत की विद्वत्ता की ख्याति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँची।

स्त्रियों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था, विशेषतः राजघरानों और उच्च कुलों में महिलाओं को शास्त्र, संगीत और चित्रकला में निपुण बनाया जाता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल पुरुषों तक सीमित नहीं थी, बल्कि ज्ञान का विस्तार व्यापक समाज तक किया गया।

विज्ञान

गुप्त युग का विज्ञान केवल पांडित्य प्रदर्शन नहीं था, बल्कि यह यथार्थ जीवन की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास था। यह युग विभिन्न वैज्ञानिक धाराओं के समन्वय का काल था – जहाँ गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और रसायनशास्त्र एक-दूसरे के पूरक बने।

इस काल में गणित को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित किया गया। अंकगणितीय सूत्रों का वर्गीकरण, बीजगणित की प्रारंभिक संकल्पनाएँ, और त्रिकोणमिति की मूल अवधारणाएँ इसी काल में विकसित हुईं। खगोलशास्त्र में ग्रहों की गति, ग्रहण की गणना और नक्षत्रों की स्थिति को मापने के लिए विशेष पद्धतियाँ विकसित की गईं।[9]

चिकित्सा विज्ञान में चरक और सुश्रुत की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस युग में शल्यचिकित्सा, हृदय रोग, और औषध निर्माण की प्रक्रियाओं पर विस्तृत शोध हुए। रसायनशास्त्र में धातु विज्ञान का विकास हुआ, जिससे सोने, तांबे, लोहे और पारद जैसी धातुओं का प्रयोग धार्मिक और उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में किया जाने लगा। इस काल में वैज्ञानिक शोध पद्धति केवल सिद्धांतात्मक नहीं रही, बल्कि अवलोकन, परीक्षण और निष्कर्ष की वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाई गई। यह प्रयोगशीलता ही थी जिसने भारत को उस समय के विश्व के अग्रणी बौद्धिक केंद्रों में सम्मिलित किया।[10]

कला, स्थापत्य और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

गुप्त युग भारतीय इतिहास में एक ऐसा काल रहा, जिसमें कला और संस्कृति ने अपनी चरम सीमा को स्पर्श किया। इस काल में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि ने एक ऐसा वातावरण निर्मित किया, जिसमें रचनात्मकता और सौंदर्यबोध ने नए आयाम ग्रहण किए। गुप्तकालीन कला और स्थापत्य न केवल धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति थे, बल्कि यह समाज की बौद्धिक परिपक्वता, सौंदर्य की समझ और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता के प्रतिबिंब भी थे।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020

कला की शैलीगत विशेषताएँ

गुप्त युग की कला की सबसे बड़ी विशेषता उसकी गंभीरता, संतुलन और सौंदर्यबोध थी। मूर्तिकला में भावों की अभिव्यक्ति इतनी जीवंत और सूक्ष्म थी कि प्रत्येक आकृति में दिव्यता और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इस युग में शारीरिक सौष्ठव, मुद्रा की कोमलता और चेहरे की भाव-भंगिमाओं पर विशेष बल दिया गया।

गुप्तकालीन मूर्तियाँ केवल धार्मिक प्रतीक नहीं थीं, बल्कि वे भावनात्मक और दार्शनिक विमर्श का भी माध्यम थीं। इन मूर्तियों में शांति, करुणा, शक्ति और भक्ति जैसे तत्वों का कलात्मक प्रकटीकरण किया गया। चाहे वह बुद्ध की ध्यानमग्न मुद्रा हो या विष्णु के विभिन्न अवतारों की प्रतिमाएँ — उनमें एक विशिष्ट आभा और गरिमा स्पष्ट झलकती है।[11]

स्थापत्य

गुप्त युग में स्थापत्य कला ने एक नये युग का आरंभ किया। मंदिर निर्माण की परंपरा को इस काल में सुव्यवस्थित रूप मिला। ईंट और पत्थर से बनाए गए मंदिरों में ऊर्ध्वगामी संरचनाएँ, अर्धगोलाकार गर्भगृह, और सजावटी स्तंभों का समावेश हुआ। देवगढ़, भीतरीगाँव, उदयगिरि, और टेर जैसे स्थलों पर बने मंदिर इस युग की स्थापत्य उपलब्धियों के प्रमुख उदाहरण हैं। इन मंदिरों में धार्मिक मूर्तियों के साथ-साथ शिल्पकारी से युक्त बाह्य दीवारों और शिखरों का अत्यंत संतुलित विन्यास देखने को मिलता है। गुप्त स्थापत्य का एक अन्य पहलू गुफा वास्तुकला है। उदयगिरि की गुफाएँ, जिनमें विष्णु के अवतारों को उकेरा गया है, तत्कालीन धार्मिक और कलात्मक संवेदना का एक सजीव रूप हैं। इन गुफाओं की दीवारों पर उकेरी गई आकृतियाँ समय के साथ भी अपनी प्रभावशीलता नहीं खोतीं।[12]

चित्रकला

गुप्त युग की चित्रकला का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण अजन्ता की गुफाएँ हैं। इन गुफाओं की भित्तिचित्रों में जैन और बौद्ध कथाओं के अलावा तत्कालीन जीवन, रीति-रिवाज, वेशभूषा, और सामाजिक संरचना का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है। रंगों की सूक्ष्मता, रेखांकन की स्पष्टता और घटनाओं का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण — यह सब गुप्त काल की चित्रकला को एक वैश्विक स्तर पर श्रेष्ठ बनाता है।

चित्रों में धार्मिक दृश्यों के साथ-साथ राजा, रानियों, संगीतकारों, नर्तकियों और सामान्य जनजीवन को भी दर्शाया गया है। इस चित्रकला में दृष्टि, गहराई, गति और भाव की अभिव्यक्ति इतनी सशक्त है कि वह केवल चित्र नहीं बल्कि कथा का माध्यम बन जाती है।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

गुप्त युग में सांस्कृतिक समरसता और परिष्कृत जीवन दृष्टि का व्यापक विकास हुआ। यह काल धर्म, दर्शन, भाषा, रीति-रिवाज और कला के एकीकृत स्वरूप को दर्शाता है। समाज में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला। राजाओं ने कलाकारों, शिल्पियों, कवियों और संगीतज्ञों को संरक्षण दिया। इससे रचनात्मकता को नई उड़ान मिली।

नृत्य और संगीत भी इस युग की सांस्कृतिक चेतना के महत्वपूर्ण अंग रहे। नृत्य मुद्राओं का शास्त्रीयीकरण हुआ और संगीत को रागों और तालों की व्यवस्थित श्रेणियों में बाँटा गया। उत्सवों और अनुष्ठानों में गीत-संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिससे यह जनमानस के साथ भी गहराई से जुड़ा।

वेशभूषा और आभूषणों में भी सौंदर्य और सुरुचिपूर्ण शिल्प का विकास हुआ। चित्रों और मूर्तियों से स्पष्ट होता है कि वस्त्रों में बारीक कढ़ाई, हल्के पर्देदार वस्त्र और जटिल आभूषणों का चलन था। इससे गुप्तकालीन समाज की फैशन-संवेदनशीलता और कलात्मक अभिरुचि का भी पता चलता है।[13]

सांस्कृतिक समन्वय और विरासत

गुप्त युग की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ केवल भारत तक सीमित नहीं रहीं। उस समय भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, तिब्बत और श्रीलंका के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए। भारतीय मंदिरों, मूर्तिकला, और नाट्यकला के प्रभाव इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड और वियतनाम तक पहुँचे।

इस सांस्कृतिक विस्तार में भिक्षुओं, यात्रियों और व्यापारियों की भूमिका अहम रही। वे भारत की सांस्कृतिक धरोहर को अपने साथ विभिन्न देशों में ले गए, जिससे गुप्त युग की कला और संस्कृति का प्रभाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हो गया।

धार्मिक सहिष्णुता और दार्शनिक चिंतन

गुप्त काल को केवल राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि उसकी धार्मिक सहिष्णुता और दार्शनिक व्यापकता के कारण भी एक स्वर्णिम युग माना जाता है। यह वह काल था जब भारत में विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक धाराएँ समानांतर रूप से विकसित हो रही थीं, और उनके बीच प्रतिस्पर्धा के स्थान पर संवाद और समन्वय की भावना देखी जाती थी। गुप्त शासकों ने न किसी एक संप्रदाय को थोपने का प्रयास किया, न ही विरोधी विचारों को दबाने का। इसके विपरीत, इस युग ने भारतीय मानस में उदारता, विवेक और बहुलता की गहराई से स्थापना की।

धार्मिक परिदृश्य की बहुलता

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

गुप्त युग में भारत धार्मिक दृष्टि से अत्यंत विविधतापूर्ण था। एक ओर वैदिक परंपराओं का पुनरुत्थान हो रहा था, तो दूसरी ओर बौद्ध धर्म और जैन धर्म की गहरी जड़ें समाज में मौजूद थीं। इसके अतिरिक्त, लोकधर्म, तंत्र साधना, प्रकृति पूजन और क्षेत्रीय आस्थाएँ भी जनमानस का हिस्सा थीं।

गुप्त शासक धर्मनिष्ठ अवश्य थे, परंतु उन्होंने कभी भी राज्य धर्म के रूप में किसी विशेष संप्रदाय को आरोपित नहीं किया। वे हिंदू धर्म के अनुयायी होते हुए भी बौद्ध और जैन साधकों को आश्रय प्रदान करते थे। मंदिरों, मठों और स्तूपों के निर्माण तथा संरक्षण का कार्य बिना किसी धार्मिक भेदभाव के किया गया।

संवाद का वातावरण

गुप्तकालीन समाज में मतभेदों को संघर्ष नहीं, बल्कि संवाद के माध्यम से सुलझाने की प्रवृत्ति प्रबल थी। धार्मिक ग्रंथों और दर्शनशास्त्रीय ग्रंथों में वाद-विवाद की परंपरा को स्थान दिया गया। मठों और विद्यापीठों में विभिन्न मतों के विद्वान आपस में तर्क और विमर्श के माध्यम से सत्य की खोज करते थे।

दार्शनिक वादों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त जैसे विविध दृष्टिकोणों को स्थान मिला। इन सभी के बीच स्वस्थ बौद्धिक प्रतियोगिता रही, किंतु कटुता का अभाव था। बौद्धों में हीनयान और महायान जैसे मत भी सक्रिय थे, फिर भी उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान होता रहा।[14]

शासकों की धार्मिक दृष्टिकोण की भूमिका

गुप्त सम्राटों ने धार्मिक नीति में निष्पक्षता और संरक्षण की भावना अपनाई। उदाहरणस्वरूप, सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में ब्राह्मण विद्वानों के साथ-साथ बौद्ध भिक्षुओं और जैन मुनियों को भी सम्मान प्राप्त था। इसी प्रकार समुद्रगुप्त के इलाहाबाद प्रशस्ति में यह उल्लेख मिलता है कि उन्होंने दक्षिण भारत के अनेक राजाओं को केवल पराजित ही नहीं किया, बल्कि उन्हें उनके धर्मों के अनुसार कर्म करने की स्वतंत्रता दी।[15]

इस धार्मिक समावेशी दृष्टिकोण का परिणाम यह हुआ कि समाज में सहिष्णुता की भावना गहरी हुई और धार्मिक उन्माद या संघर्षों की घटनाएँ अत्यल्प रहीं।

गुप्त युग को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?

भारतीय इतिहास में अनेक राजवंश और कालखंड आए, किंतु कुछ युग अपनी विशिष्ट उपलब्धियों और व्यापक प्रभावों के कारण अमर हो गए। ऐसा ही एक काल है — गुप्त युग, जिसे ऐतिहासिक दृष्टि से भारत का "स्वर्ण युग" कहा जाता है। यह नाम केवल प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि इस युग की राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक उत्कर्ष, सामाजिक संतुलन और वैज्ञानिक जागृति को दर्शाने वाला एक सटीक विशेषण है। इस लेख में हम गुप्त काल को स्वर्ण युग कहे जाने के पीछे के अनेक आधारों का विश्लेषण करेंगे।

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

गुप्त वंश के सम्राटों ने एक सुदृढ़ और संगठित शासन व्यवस्था विकसित की। शासन प्रणाली में केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन के बीच संतुलन, समाज के सभी वर्गों को स्थान, और न्यायिक प्रणाली की सुदृढ़ता जैसी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। सम्राटों ने कर प्रणाली को व्यवस्थित किया और आम जनता के हितों की रक्षा की। समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय जैसे सम्राटों के नेतृत्व में साम्राज्य का क्षेत्र विस्तार भी हुआ, किंतु यह विस्तार केवल सैन्य बल पर आधारित न होकर कूटनीति, विवाह संबंधों और अधीनस्थ शांति संधियों के माध्यम से भी हुआ, जिससे विभिन्न राज्यों के बीच सहयोग की भावना विकसित हुई। एक स्थिर और प्रभावशाली शासन प्रणाली ने ही इस युग को विकास के पथ पर अग्रसर किया । गुप्त युग में कृषि, व्यापार और उद्योग में उल्लेखनीय प्रगति हुई। कृषकों को भूमि का स्वामित्व प्राप्त था और सिंचाई के साधनों को बेहतर बनाया गया। इस युग में भूमि अनुदान की परंपरा ने ग्राम-व्यवस्था को सशक्त किया, जिससे ग्राम स्वशासन की नींव पड़ी।[16]

भारत का बाह्य व्यापार भी इस समय उत्कर्ष पर था। रोम, यूनान, दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन से व्यापारिक संबंध स्थापित थे। सोने, रेशम, मसालों और हस्तशिल्प का निर्यात किया जाता था। व्यापारिक समृद्धि के प्रमाण तत्कालीन सिक्कों, व्यापारिक मार्गों और विदेशी यात्रियों के विवरणों में मिलते हैं।

गुप्त शासन की एक विशेषता थी – समाज में संतुलन और समरसता का वातावरण। जातीय संरचना में कठोरता अवश्य थी, परंतु सामाजिक उथल-पुथल या व्यापक असंतोष की घटनाएँ विरल थीं। समाज के सभी वर्गों को आर्थिक और धार्मिक गतिविधियों में भागीदारी मिली।

इस काल में स्त्रियों की स्थिति तुलनात्मक रूप से सम्मानजनक थी। अनेक स्त्रियाँ शिक्षा, कला और साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय थीं। गृहस्थ जीवन को आदर्श माना गया, किंतु साधु-संन्यासियों और तपस्वियों को भी सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

गुप्त युग में भारत एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र बन चुका था। चीन से फाह्यान जैसे यात्रियों ने भारत की धार्मिक उदारता, सामाजिक व्यवस्था और बौद्ध मठों की प्रशंसा की। भारत की कला, स्थापत्य, धर्म और साहित्य ने दक्षिण-पूर्व एशिया, तिब्बत और श्रीलंका तक गहरा प्रभाव डाला।

बौद्ध और हिन्दू भिक्षु विभिन्न देशों में जाकर ज्ञान का प्रचार करते थे और साथ ही विदेशी विद्यार्थी नालंदा तथा अन्य विद्यापीठों में अध्ययन हेतु भारत आते थे। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को मजबूत करता था।

इस युग में धातुकला और वास्तु निर्माण तकनीकों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। कुतुब मीनार परिसर में स्थित लौह स्तंभ, जो आज भी जंग रहित है, इस युग की धातुकला कौशल का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके निर्माण में प्रयुक्त तकनीक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

इसके अतिरिक्त, जल संरक्षण, मंदिर निर्माण की संरचना, औजार निर्माण, और खगोल विज्ञान से जुड़ी प्रौद्योगिकी में भी गुप्त युग ने उल्लेखनीय नवाचार किए। आर्यभट जैसे वैज्ञानिकों का योगदान इसी काल में हुआ, जो गणित और खगोलशास्त्र की आधारशिला बने।[17]

भारतीय इतिहास में गुप्त युग को स्वर्ण युग के रूप में इसलिए माना जाता है क्योंकि इस काल में देश ने विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति और विकास किया। यह युग राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और आर्थिक क्षेत्रों में अद्वितीय उपलब्धियों से भरा था, जिसने भारतीय सभ्यता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया।[18]

गुप्तकाल में शासन प्रणाली अत्यंत सुव्यवस्थित और प्रभावशाली थी। गुप्त शासकों ने साम्राज्य को विस्तार दिया और एक मजबूत केंद्रीय शासन प्रणाली स्थापित की, जो विभिन्न प्रांतों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करती थी। प्रशासनिक व्यवस्था में अधिकारीगण अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान थे, जिससे कानून व्यवस्था बनी रही और सामाजिक शांति कायम रही। शासन की इस स्थिरता ने राज्य में विकास और समृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण बनाया।

गुप्तकालीन भारत की अर्थव्यवस्था अत्यंत समृद्ध थी। कृषि उत्पादन में सुधारों के कारण अन्न की पूर्ति बढ़ी और ग्रामीण क्षेत्र विकसित हुए। इसके साथ ही, व्यापार को भी बढ़ावा मिला। भारत ने समुद्री और स्थल मार्गों के जरिए रोमन साम्राज्य, फारस, चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए। इस व्यापार ने न केवल आर्थिक विकास किया बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान भी बढ़ायाI।[19]

इस काल में सामाजिक संरचना में संतुलन और सहिष्णुता थी। हालांकि जाति व्यवस्था प्रचलित थी, परंतु विभिन्न वर्गों के बीच सौहार्द्र और सहयोग की भावना थी। स्त्रियों की स्थिति में भी अपेक्षित सुधार देखने को मिला, जहां वे शिक्षा, कला और परिवार के अन्य कार्यों में सक्रिय थीं। धार्मिक सहिष्णुता के कारण विभिन्न धर्मों के अनुयायी सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सके।

गुप्तकालीन भारत ने साहित्य, कला, संगीत और नृत्य के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की। कवि कालिदास जैसे महान साहित्यकार इसी युग के उदाहरण हैं, जिनके काव्य और नाटक आज भी अमर माने जाते हैं। स्थापत्य कला में मंदिरों का निर्माण हुआ, जिनमें नक्काशी, मूर्तिकला और डिजाइन उत्कृष्टता की मिसाल थे। इस युग की कला न केवल धार्मिक थी, बल्कि उसमें जीवन के विविध रंग और भाव भी देखे जा सकते हैं।[20]

गुप्तकाल में गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। आर्यभट जैसे विद्वानों ने शून्य और दशमलव पद्धति का विकास किया, जिसने वैश्विक गणित को नई दिशा दी। चिकित्सा में आयुर्वेद के ग्रंथों का संवर्धन हुआ और रोगों के उपचार के नए तरीके विकसित किए गए। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भी कई खोजें हुईं, जो आधुनिक विज्ञान की नींव बनीं I गुप्त युग की एक बड़ी विशेषता

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

इसकी धार्मिक सहिष्णुता थी। इस युग में हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अनुयायी समान सम्मान के पात्र थे। धार्मिक विविधता और दार्शनिक विमर्श ने सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा दिया। विभिन्न दार्शनिक मतों के बीच संवाद और बहस से बौद्धिक चेतना को बल मिला।

संदर्भ सूची

1-ट्विंकल शर्मा, (2022) गुप्त काल के दौरान विज्ञान। मॉडर्न जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 1(9), 271–277 – 271–277

2-अबू रेजा एम. परविस, (2024) प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना: गुप्त काल का गहन अध्ययन। मैनकाइंड: एडम टू मी, 1(1), 17–20 – 17–20

3-ओमपाल सिंह, (2024) गुप्तकालीन समाज का सामाजिक-धार्मिक परिवेश: सामान्य अवलोकन। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 9(3), 326–330 – 326–330

4-एलिज़ाबेथ ए. सेसिल, पीटर सी. बिस्चोप, (2021) गुप्त काल में मुहावरे और नवाचार: एरन और सोंधनी का पुनः अवलोकन। इंडियन इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू, 58(1), 1–26 – 1–26

5-संतोष सी. गोहोकर, (2017) भारत के इतिहास में गुप्त साम्राज्य का अध्ययन और विश्लेषण। इनोवेटिव रिसर्च थॉट्स, 3(1), 1–4 – 1–4

6-गुरुलिंगैया एम. के., (2021) गुप्त काल की आर्थिक स्थितियों की खोज। साउथ एशिया क्रॉनिकल, 3(1), 50–55 – 50–55

7-जैदेव दासगुप्ता, (2024) प्राचीन भारत में गणित का उद्भव: एक पुनर्मूल्यांकन। arXiv प्रीप्रिंट, arXiv:2403.04823 – 1–30

8-टी. ई. गिरीश, सी. राधाकृष्णन नायर, (2011) प्राचीन भारत में भौतिक बलों और अवकलन गणित के विचार। arXiv प्रीप्रिंट, arXiv:1101.0315 – 1–15

9-सुभाष काक, (2003) बेबीलोनियन और भारतीय खगोलशास्त्र: प्रारंभिक संबंध। arXiv प्रीप्रिंट, arXiv:physics/0301078 – 1–20

10-सुभाष काक, (2009) प्राचीन भारत में समय, स्थान और संरचना। arXiv प्रीप्रिंट, arXiv:0903.3252 – 1–12

11-विलियम डलरिंपल, (2024) भारत से स्वर्णिम मार्ग: प्राचीन विश्व की खोज। द ऑस्ट्रेलियन, 29 अगस्त – 1–3

12-राम शरण शर्मा, (2003) प्रारंभिक मध्यकालीन भारतीय समाज: सामंतवाद में एक अध्ययन। ओरिएंट लॉन्गमैन – 45–67

13-साइलेन्द्रनाथ सेन, (1999) प्राचीन भारतीय इतिहास और सभ्यता। रूटलेज – 227–245

14-कुमार, राधा, (2014) स्त्री संघर्ष का इतिहास। वाणी प्रकाशन – 134-145

15-जोशी, गोपा, (2015) भारत में स्त्री असमानता। हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय – 48-56

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 9, Issu 3, 2020**

16-शर्मा, ऋषभ देव, (2016) समकाल से मुठभेड़। साहित्य कुंज – 55-60
17-सिन्हा, मृदुला, (2009) मात्र देह नहीं है औरत। सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली – 98-106
18-शर्मा, ऋषभ देव, (2016) समकाल से मुठभेड़। साहित्य कुंज – 55-60
19-प्रभा, (2014) बाज़ार के बीच: बाज़ार के खिलाफ, भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न / वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 120-128
20-नासिरा, (2014) औरत के लिए औरत। सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली – 77-84

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists